The Position of Women in The Church

कलिसीया में महिलाओं का स्थान

कलिसीया में महिलाओं का स्थान

क्या महिलाएँ कलिसीया चला सक्ति है? क्या महिलाएँ मसीही कलिसीयाओं में प्रचार कर सक्ति है? आज इस विषय में अनेक दृश्य कलिसीयाएँ और संघठनों परमेश्वर का वचन का सुनने के बदले संसार का सुनते है। आइए, हम परमेश्वर का वचन क्या कहती है देखेंगे। परमेश्वर का वचन हमें इस प्रकार की प्रस्त्रो का उत्तर स्पष्ट रूप से देती है। हमारे लूथरन कलिसीया परमेश्वर का वचन को पूरा पूरा आदर करती है; और पालन भी करती है।

मनुष्य और मनुष्यी की सृष्टि

पुरुष और स्त्री का संपर्क के बारे में अछी जानकारी के लिए हमें बाईबल का सुरूआत कि ओर जाना आवश्यक है; जहाँ परमेश्वर प्राकृतिक छटा दिन में पुरुष और स्त्री का रचना की। परमेश्वर ने पहले आदम (पुरुष) को और बाद में हव्वा (स्त्री) को बनाया।

"अतः यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और जब वह सो रहा था तो उसने उसकी एक पसली निकालकर उसके स्था में मांस भर दिया। तब यहोवा परमेश्वर, आदम में से निकाली गई उस पसली से एक स्त्री की रचना करके, उसे आदम के पास ले आया।"

–उत्पत्ति 2 : 21-22

हव्वा का मतलब मनुष्यी, आदम अर्थात् मनुष्य का मदत्तकार के रूप में रची गयी था। हव्वा को परमेश्वर आदम का पसली से बनाया है। उस से यह मालुम होता है कि हव्वा आदम का सहायता करने के लिए बनाई गई थी। पुरुष परिवार का शर है एवं स्त्री उसका मदत करनेवाली है।

पाप में पतन के बाद परमेश्वर ने इन दोनों के संपर्क के बारे में कहा "वह तुछ पर प्रमुता करेगा।" स्त्री से परमेश्वर ने कहा था। उत्पत्ति 3 : 16 में।

आरम्भ से यह था। परमेश्वर का आज्ञा। पुरुष परिवार का शर है और स्त्री पर शासन करने का अधिकार उसको दिया गया है। स्त्री अपनी पत्ती का वश में रहकर उसका मदतकारी के रूप में रहना है।

परमेश्वर के साथ संपर्क में मनुष्य और मनुष्यी का स्थान

परमेश्वर का व्यवस्था के अनुसार मनुष्य और मनुष्यी दोनों ही पापी के रूप में जाना जाते है। कृपया रोमियों 3 : 10-18 को बाइबल में से पढ़िए इस वचन के अनुसार मनुष्य और मनुष्यी दोनों ही पापी है और अवश्य दोनों को ही छुट्कारा पाना जरूरी है। हमारे प्रभु यीशु मसीह दुनिया में पापीओं को अर्थात् पुरुषों और स्त्रीयों को बचाने के लिए आया हमारे प्रभु यीशु मसीह समग्र मानव समाज अर्थात नरों और नारीयों को बचाने के लिए क्रूश पर बली हुआ। पाप से छुट्कारा पाने के लिए हर कोई अपनी अपनी पापों के लिए पश्चताप कर कर अनन्त जीवन पाने के लिए प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। यद्यपि नर और नारी एक जैसे पापी है फिर भी वे दोनों में अन्तर है। इस वात्त का कोई बदल नहीं सकता कि बच्चा जन्म देना अधिकार नारी का ही है। नरकों नहीं। उनका जीवन में केई विषय एक दूसरे से अलग है। नर नारी से शक्तिमान है और नारी नर के सामने एक कमजोर पात्री है।

परीवार में नर और नारी

"प्रभु यीशु मसीह के कारण एक दूसरे का अधीन रहो।" इफिसियों 5 : 21 परमेश्वर का आज्ञा के अनुसार नर और नारी एक दूसरे के अधीन रहना है। विवाह और परीवार का परमेश्वर ने ही स्थापना किया है। परिवार में कैसे जीना है परमेश्वर वे दोनों को ही आज्ञा देता है।

पत्नीयाँ आपन अपने पतियों का अधिन रह जैसे प्रभु का अधिन रहते हो। जैसे मसीह कलिसीया का शर है; कलिसीया उसका सरीर है ठिक ऐसे ही पुरुष स्त्री का शर है।

क्योंकि पति तो पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह भी कलीसिया का सिर है और स्वयं देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें।
– इफिसियों 5 : 23-24

जैसे कलिसीया अपना प्रभु का आज्ञाकारी वन कर रहती है ठिक ऐसे ही पत्नी भी हरबात में अपनी पति का आज्ञा मान कर रहना चाहिए। **"हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम करो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी महिमायुक्त कलीसिया बनाकर प्रस्तुत करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति भी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम करे। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह स्वयं अपने आप से प्रेम करता है।"** – इफिसियों 5 : 25-28

जैसे प्रभु यीशु मसीह अपना देह रूपी कलिसीया से अपार प्रेम किया ठिक ऐसे ही पति अपनी पत्नी से प्रेम करे। **"तो फिर व्यवस्था की क्या आवश्यकता रही? वह अपराधों के कारण बाद में दी गई कि उस वंशज के आने तक रहे जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी। और वह स्वर्गदूतों द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई।"** – गलातियों 3 : 19

इसी प्रकार, हे पतियो, तुम में से प्रत्येक अपनी पत्नी के साथ समझदारी से रहे, उसे निर्बल पात्र जाने, क्योंकि वह स्त्री है। वह जीवन के अनुग्रह में से संगी वारिस जानकर उसका आदर करे, जिस से तुम्हारी प्रार्थना में बाधा न पहुँचे। – 1 पतरस 3 : 7

इन वचनों से हम देखते है कि पतियों अपनी पत्नीयों से कठोर और निष्ठुर न हो यध्यपि वे अपनी अपनी पत्नीओं का शासक है। वे प्रेम में उनका

शासन करें। यह आज्ञा हर को एक दिया गया है। **"अतः तुम में से प्रत्येक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम करे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।"** – इफिसियों 5 : 33

कलिसीया में पति और पत्नी

जैसे परमेश्वर ने परिवार का गठन किया ऐसे ही उसने कलिसिया का भी इस जमिन पर स्थापना किया। जैसे परिवारवालों को ऐसे ही कलिसीयावालों को काम और आज्ञाएँ दी। जैसे परिवार में पति पत्नी का शर है ठिक ऐसे ही कलिसिया में भी नरों नारीयों का। नया नियम के अनुसार विशप, ड़िकन और प्रचीनों कलिसीया को चलाने वाले होते है। वे सब एक एक पत्नी का ही पति होना ज़रूरी है। 1 तिमुथियूस 3 : 2, 3 : 12, तितुस 1 : 61, परमेश्वर को मालुम था कि भविष्य में मनुष्य उनका आज्ञाओं का उल्लंघन कर सकता है और महिला अर्थात् नारी को भी कलिसीया में मुख्य व्यक्ति के रूप में खड़ा कर सकता है।

इसलिए परमेश्वर ने निम्न प्रकार वचन दिया, **"प्रत्येक स्त्री चुपचाप और सम्पूर्ण अधीनता से शिक्षा ग्रहण करे। मैं यह अनुमति नहीं देता कि स्त्री उपदेश दे या पुरुष पर अधिकार जाताए : वह चुप रहे।"** – तिमुथियूस् 2 : 11-12, वचन के अनुसार स्त्रीयाँ कलिसीयाँ में बच्चों को शिखा सक्ति है परन्तु वे कलिसीयों में नरो को उपदेश देना परमेश्वर का आज्ञा का विरुद्ध है। कारण प्रचार करने का या उपदेश देने का अधिकार कलिसीया में केवल नरों को दिया गया है, नारीयों को नहीं। 1 तिमुथियूस् 2 : 11-12 और तितुस का 1 : 6 में हम इस के बारे में बता चुके है। यदि महिलाएँ कलिसीयाओं में प्रचार करती है जहा पुरुषों बैठे है तो क्या वे पुरुषों का ऊपर अधिकार जमाते नहीं? घर में हो या कलिसीया में महिलाएँ, पुरुषों का ऊपर अधिकार न करे। आजकल की कलिसीया में क्या है? क्या आजकल की कलिसीया में महिलाएँ प्रचारक या पाष्टरों का स्थान लेते है? अगर ऐसा है तो यह बिलकुल गलत है और पाप है। यदि महिलाएँ महिलाओं को और बच्चों को शिक्षार्देती है तो उत्तम है।

अगर हम परमेश्वर का आज्ञाओं का पालन नहीं करते है और महिलाओं को पुरुषों का उपर अधिकार करने का अनुमति देते है तब हम परमेश्वर का विरुध पाप करते है क्योंकि हम उसका आज्ञाओं का उल्लंघन करते है।

कुरिन्थियों के कलिसिया में प्रेरित पौलुस इस आज्ञा का पालन किया हम निचे कि वचन से कह सकते हैं। "क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परन्तु शान्ति का परमेश्वर है, जैसा कि पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है। स्त्रियां कलीसियाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। वे अधीनता से रहें जैसा कि व्यवस्था भी कहती है। यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री के लिए कलीसिया में बोलना अनुचित है। क्या परमेश्वर का वचन सब से पहले तुम्हीं से निकला? अथवा क्या वह केवल तुम्हीं तक पहुँचा है?" – 1 कुरिन्थियों 14 : 33-36 निश्चय ही यह प्रेरित पौलूस का वातों में एक कठिन वस्त है? हम क्या कहे? कुरिन्थियों कि कलिसीया में महिलाएँ बिना विवाद और तर्क के प्रचारकों और शिक्षककों से नम्व्रता और अधिन में होकर शिखती थी।

यदि कुछ लोक कहते है कि प्रेरित पौलुस का शिक्षा इस युग में नहीं चलता तब हम कहते है क्यू नहीं? परमेश्वर का वचन हर समय के लिए है। हमारे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह हम से इन वचनों को कहता है इसलिए आईए हम इस नाशमान संसार की नहीं परन्तु हमारे प्रेमी परमेश्वर का वचन का आदर और पालन करे 'अमीन'।